लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17

वर्ष 04 अंक 06 लखनऊ। सोमवार 30 से 05 नवम्बर-2017

e-mail-pawanprawah@gmail.com

मूल्य : तीन रूपये पृष्ठ-16

प्राणिक ऊर्जा : विशिष्ट उपचार

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक
एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

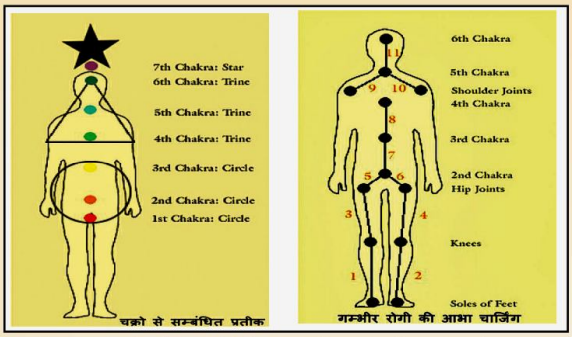

पिछले 22 (बाइस) अंकों में हमने भौतिक शरीर में ऊर्जा का संचार व उससे उत्पन्न ऊर्जा (आभा), जो भौतिक शरीर के कुछ क्षेत्र तक प्रभावी रहती है तथा प्राण के स्त्रोत, रंग प्राण व उसमें मुख्यतः प्राणिक ऊर्जा (शक्ति) किसे कहते हैं व क्या लाभ हैं, भौतिक शरीर में चक्रों का क्या महत्व है व इससे शरीर की ऊर्जा का संतुलन कैसे प्रभावी होता है। ऊर्जा (आभा) के परत, उनका महत्व और उससे शारीरिक स्वास्थ्य में, क्या लाभ होगा, तथा शारीरिक रोगों के निदान में प्राणिक उपचार (हीलिंग), ऊर्जा के सात चक्रों को जाग्रित करने के बारे में तथा मौलिक उपचार के लिए स्तर-I व विशिष्ट उपचार स्तर-II में प्रत्यक्ष ऊर्जा के लिए विजुअलाइजेशन व अवरूद्ध चक्र, औरिक ऊर्जा की अशुद्धिया, आभा और चक्रों के गूढ़ ज्ञान, सहज ज्ञान से आभा और चक्रों को पढ़ने की जानकारी से पूर्णतः अवगत हुये थे। इस अंक में, सहज ज्ञान से आभा और चक्रों के पार्दर्शिता आदि के विषय मे क्रमशः आगे बताया गया है।

(भाग-23)

क्रमशः...

20.0 चक्र प्रणाली की रूकावट दूर करना: यह रोगी के ऊर्जावान स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है कि चक्र प्रणाली के माध्यम से ऊर्जा के ऊपरी प्रवाह और हर चक्र में और ऊर्जा के प्रवाह को बनाए रखा जाए। अगर आपको पता चल गया है कि चक्र अवरुद्ध है-ऊर्जा उस चक्र पर अपना सामान्य प्रवाह बंद कर देती है तो स्वस्थ और ऊंचा ऊर्जा प्रवाह बहाल करना संभव है।

चक्रों को अनवरोधित करते हुए सामान्य स्थिति के दौरान हाथों की स्थिति के साथ-उसी स्थिति में चक्र पर हाथ रखकर और साथ ही नियमित रूप से हाथ को घुमाते हुये किया जाता है। जब आप किसी निश्चित स्थान पर अवरुद्ध चक्र का पता लगाते हैं, तो उसे निम्नलिखित तरीके से साफ करें:

सामान्य चक्र के उपचार के दौरान जब आप उस चक्र बिंदु पर हाथ लगाते हैं, तो उचित चक्र (रेखांकित सितारे वाले चित्र को देखें) को उचित तरीके से कल्पना करें, जब आप उस चक्र को पूरा समय के दौरान और उसी समय-कल्पना करें, इरादा करें और समझें कि ऊर्जा के ऊपरी प्रवाह में रुकावट हटाया जा रहा है-उस चक्र को ऊपर से बहने वाली ऊर्जा, उस चक्र बिंदु पर, चक्र से बहते हुए, चक्र में अवरुद्ध होने के कारण इसमें ऐसा कर रही है, हटाया जा रहा है। उस ऊर्जा को भी विजुअलाइज़ करें जो चक्र से गुजरते हुए चारों तरफ आसानी से गुज़रती हैं, इस प्रकार से ऐसा करते हुये उस प्रवाह की किसी भी रुकावट से हटाया जा रहा है। जैसा कि आप पूर्व मे सीख चुके हैं, जिसमें आप अपनी आंखों के साथ प्रतीक और चक्र की समाशोधन की कल्पनाकर इसे आसानी से पा सकते हैं। थोड़े से अभ्यास के साथ तथा अपनी आँखों के खुलेपन के साथ उचित तरीके से कल्पना करने में सक्षम होंगे। आप इस तकनीक का अभ्यास करते हुये वांछित लाभ पा सकेंगे।

प्रत्येक प्रतीक एक विशिष्ट ऊर्जा प्रवाह से संबंधित हैं और प्रतीकों का यह ऊर्जावान प्रकृति इस तरह से चक्रों से संबंधित है। उदाहरण के लिए, 1, 2 और 3 चक्र, अपने ऊर्जावान कार्यों में सर्किल के साथ एक रिश्ता रखते हैं। 4, 5 वें और 6 वें चक्रों में त्रिकोण (ट्राइन) के ऊर्जावान प्रकृति के साथ एक रिश्ता होता है। 7वें चक्र में सितारा (स्टार) के साथ एक करीबी ऊर्जावान रिश्ता हैं। चक्र के समाशोधन के दृष्टकोण से, इन प्रतीकों और इसलिए उनके चक्र की ऊर्जावान प्रकृति का उपयोग करके तथा चक्र की समाशोधन के साथ मिलकर, इस तकनीक की प्रभावशीलता प्रदान करता है जिससे उन चक्र के माध्यम से ऊर्जा प्रवाह को सफाई मिल जाती है और अवरोध भी हटा दिया जाता है।

यदि आप महसूस करते है कि पहले चक्र की एक रुकावट अभी भी मौजूद है, तो उसे थोड़ा अलग तरीके से इलाज किया जाना चाहिए, क्योंकि शरीर के संबंधित क्षेत्र (जननांग क्षेत्र) पर हाथ रखकर ऐसा नहीं किया जाता है। किसी भी व्यक्ति के हाथ, हालांकि, शरीर ऊर्जा के लिए ग्रहणशील चैनल हैं और रोगी के हाथ इस चक्र के इलाज के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

20.1 पहला चक्र साफ करने का तरीका: अपने हाथों को रोगी के हाथों पर रखें, अपने हथेलियों के साथ अपने मरीज की हथेली पर रखें जैसा कि आप ऊर्जा में भेजते हैं, वृत्त (सर्किल) की कल्पना करें और ऐसी कल्पना जिसमें पक्का इरादा और समझ हो कि पहला चक्र साफ हो रहा है। ऐसा नहीं होगा जैसा कि एक समाशोधन पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसे प्रत्यक्ष हाथ प्लेसमेंट से प्रदान किया जाता है बल्कि इसमें और अधिक मदद भी मिलेगी।

20.2 अन्य चक्र साफ करने के तरीके: चित्र को देखें, प्रतीक (सिम्बल) शरीर के क्षेत्रों के साथ भी जुड़े हुए हैं। वृत्त (सर्किल) डायाफ्राम नीचे पेट के साथ जुड़ा हुआ है, त्रिकोण (ट्राइन) तीसरा आंख तक डायाफ्राम से ऊपर के क्षेत्र और सिर के मुकुट के साथ सितारा (स्टार)। पूरक क्षेत्रों पर हाथ को लेजाने के दौरान उपयुक्त प्रतीकों का दिमाग में चित्रण (विजुअलाइज़ेशन) भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए-निचले पेट में समस्याओं का इलाज करते समय, यदि आप महसूस कर सकते हैं कि यह उपयुक्त है, तो सामान्य चक्र स्थानों (पोजीसंस) के बाद पूरक स्थानों में हाथ ले जाते समय वृत्त (सर्किल) के दृश्य का उपयोग करें। अवरुद्ध चक्रों के अलावा स्थानों (पोजीसंस) के उपचार के दौरान प्रतीकों का उपयोग ज्यादातर रोगियों पर आवश्यक नहीं होगा, लेकिन अगर आपको लगता है कि यह आपके सामने आए किसी विशेष स्थिति का लाभ उठाएगा, तो इसका इस्तेमाल करें। आप यह जानकर दिलचस्पी ले सकते हैं कि इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में एक प्रतीक प्रबल होता है, जबकि अन्य प्रतीकों के तत्व भी मौजूद होते हैं।

21.0 औरा चार्जिंग (आभा बढ़ाना): ऊर्जा की कमी, यद्यपि अधिकांश रोगियों में ऐसा नहीं होता है, एक गंभीर स्थिति है जो रोगी की पूरी जिंदगी की प्रक्रिया को रोकती है और रोगी को और बीमारियों के लिए अधिक संवेदी बनाता है तथा जो कुछ भी हीलिंग का कार्य किया जा रहा है, उसकी प्रभावशीलता को भी बाधित कर सकता है।

ऊर्जा चिकित्सा में, इस स्थिति को आभा चार्जिंग के रूप में जानी जाने वाली एक प्रक्रिया के माध्यम से ठीक किया जा सकता है, जिसके कारण कम ऊर्जा क्षेत्र को चार्ज किया जाता है या ऊर्जा से भरा होता है। जबकि चक्रों में ऊर्जा के सामान्य प्रवाहकत्व (कंडक्सन) के बारे में, आपने हाथों को ले जाने (हाथों की पासिंग) की स्थिति के दौरान, आभा को ऊर्जा से जोड़ती है। जब ऊर्जा कम हो जाती है आभा चार्जिंग-ऊर्जा क्षेत्र की ऊर्जा में एक पूरक के रूप मे अधिक प्रत्यक्ष और विशिष्ट तरीके से काम करती है। हालांकि आभा चार्जिंग सभी रोगियों पर जरूरी नहीं है, परंतु बहुत से रोगियों, विशेषकर उन शर्तों के साथ जो जीवन ऊर्जा (जैसे अवसाद, कैंसर, एड्स, हृदय रोग और कई अन्य गंभीर स्थितियों) को खतरा पैदा करते हैं, को लाभ होगा। आप पाएंगे कि यह सामान्यतः गंभीर बीमारियों के लिए जरूरी होता है और इन व्यक्तियों के उपचार के लिए पुनः ऊर्जाकरण और अच्छी भावना प्रदान करनी होगी। यह उन लोगों के लिए भी उपयोगी है जो बीमारियों से दुखी हो चुके हैं उन्हें इससे रोक सकते हैं और इन रोगियों में अच्छी भावना उत्पन्न कर सकते हैं।

21.1 गम्भीर रोगी के आभा को चार्ज करना: पैरों से शुरुआत करके चित्र में दिखाए गए शरीर के विभिन्न अग्रेतर संवेदनशील क्षेत्रों पर अपने हाथ को रखें। प्रत्येक स्थिति में, क्षेत्रों के निचले छोर पर दाहिनी हथेली का आयोजन किया जाता है, उच्चतर क्षेत्रों पर बाए हथेली का आयोजन किया जाता है। उदाहरण के लिए-स्थिति 1 में, रोगी के दाहिने पैर के निचले हिस्से पर, आपको दाहिने हथेली रखनी है और रोगी के दाहिने घुटने के शीर्ष पर आपकी बाईं हथेली 7 दिखाये गये तरीके से, अपने हाथों के द्वारा पहले स्थान से शुरू कर रोगी को ऊर्जा प्रदान करना है, लेकिन इस ऊर्जा को सामान्य से थोड़ा हटकर अलग तरीके से स्थानांतरित करना है। ऊर्जा को स्थानांतरण अधिक गहन तरीके से करना चहिये, जैसे कि आप रोगी और ऊर्जा के क्षेत्र में ऊर्जा के प्रति विकिरण कर रहे हैं, ताकि दोनों के बीच एक बंधन पैदा हो सके। आप अपने दोनों हाथों से रोगी और उनकी ऊर्जा क्षेत्र में समान रूप से ऊर्जा विकिरण करें तथा अपने आप को रोगी के रूप में और रोगी के क्षेत्र के रूप में समझें, क्योंकि यह ऊर्जा से भर जाता है। इस क्षेत्र में रोगी और रोगी के क्षेत्र के बीच के बंधन को अनुभव करे तथा इस क्षेत्र में ऊर्जा से फ़ील्ड को भरने व उसके विस्तार होने की कल्पना करें।

मरीज में ऊर्जा को इस तरह, एक से दो मिनट तक स्थानांतरित करें या जब तक की आपको पूर्णता की भावना और/या ऊर्जा प्रवाह में कमी नहीं होने का अनुभव होता है। अब मरीज के बाएं पैर के निचले हिस्से पर अपने दाहिनी हथेली और रोगी के बायीं घुटने पर अपनी बाईं हथेली की जगह 2-स्थान की स्थिति में ले जाएं। ऊर्जा को भरने और विस्तार करने की दृष्टि से, जैसा कि पहले किया गया था, ऊर्जा प्रवाह (ट्रांसमिशन) जारी रखे, मरीज और उनके ऊर्जा क्षेत्र के बीच एक बंधन बनाये, जब तक आप पूर्णता की भावना और/या ऊर्जा प्रवाह मे कमी नहीं हो जाती, तब तक यह दूसरी स्थिति का इलाज जारी रखें, फिर भी यह भी सुनिश्चित करें कि आप रोगी के क्षेत्र के इस तरफ और उस दूसरी तरफ के बीच एक संतुलन को समझते हैं जिसे आपने अभी इलाज किया है।

इस स्थिति का इलाज पूरा करने के बाद, मरीज को ऊपर दिए गए संख्यात्मक क्रम में दिखाए गए स्थलों/ क्षेत्रों (पदों) में लगातार जारी रखें, प्रत्येक स्थिति में, ऊर्जा को सही तरीके से ट्रांसमिट करें, जब तक आपको लगता है कि यह स्थिति पूरी नहीं है- प्रत्येक स्थिति को 1 से 2 मिनट के उपचार की आवश्यकता होनी चाहिए, हालाँकि कुछ स्थितियों में, आपके रोगी की विशेष जरूरतों के आधार पर थोड़ा अधिक समय की आवश्यकता हो सकती है।

जब आप एक तरफ से दूसरी तरफ इलाज हेतु आप ऊपर की ओर बढ़ते हुये, तब तक का इलाज करते हैं जब तक दोनों तरफ के बीच ऊर्जा में संतुलन स्थापित नहीं हो जाता है-जानबूझकर ऊर्जा को शरीर के ऊपरी हिस्से की ओर ले जाते है और इस रूप में ऊर्जा दोनों तरफ पर संतुलित होती है। इस प्रक्रिया में, हाथ की सटीक स्थिति अलग-अलग हो सकती है। उदाहरण के लिए-कुछ चिकित्सक हाथ के बाहों को उपयोग करना पसंद कर सकते हैं, लेकिन यह आम तौर पर आवश्यक नहीं है।

जब आप इस तकनीक का उपयोग करते हुए रोगी के शरीर मे ऊपर की ओर बढ़ते हैं, आप मरीज की आभा चार्जिंग को अनुभव करेंगे और यह ऊर्जा को भरने के उपरांत विकिरण करते महसूस कर सकते हैं। आप अपने अंतर्चक्षु में या अपनी आंखों में आभा का भरना, चमकना और विस्तार करना अनुभव कर सकते हैं। इस तरह से मरीज में ऊर्जा तीव्र प्रवाहित होती है, जिससे रोगी और उनके क्षेत्र के बीच के बंधन तथा भरने और विस्तार करने का अनुभव होता है, जो इस प्रकार से आभा को भरने और चार्ज करने का निर्देश देती है।

शेष अगले अंक भाग-24 मे पढ़े....